अंक – प्रथम

वर्ष : 2019

राष्ट्रीय ध्रुवीय एवं समुद्री अनुसंधान केंद्र ,
हेडलैंड सडा, वास्को द गामा, गोवा

"ध्रुविका"

स्वच्छता ही सेवा

।। स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत ।।

अनुक्रमणिका

1-	निदेशक का संदेश	02
2-	अपनी बात - डॉ. रवि मिश्रा	03
3-	हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित कार्यक्रम, प्रतियोगिताएं व विजेता	04
4-	हिन्दी कार्यशाला	06
5-	गणतंत्र दिवस की झलकियाँ	07
6-	वर्ष के दौरान विभिन्न संस्थानों के छात्रों का एनसीपीओआर में भ्रमण	08
7-	विश्व अंटार्कटिक दिवस एवं अन्य क्रियाकलाप	09
8-	38 वें भारतीय वैज्ञानिक अंटार्कटिक अभियान की झलक	10
9-	106 वें भारतीय विज्ञान सम्मेलन की झलक	11
10-	एनसीपीओआर स्थापना दिवस	12
11-	काव्य संकलन - सुश्री प्रतिभा पाण्डेय	13
12-	यात्रा संस्मरण - डॉ. सत्येन्द्र भंडारी	14
13-	अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस एवं योग दिवस की झलकियाँ	15
14-	गंगा क्या तुझे गुस्सा नहीं आता ?- मो. तासीन कमर (संकलन)	16
15-	स्वच्छ भारत मिशन - श्री राजेन्द्र कुमार (संकलन)	16
16-	किसान की कहानी - श्री रविंद्र सिंह	17
17-	चाणक्य के कुछ अनमोल विचार - श्री सौरभ भट्ट(संकलन)	18
18-	एनसीपीओआर परिवार के बच्चों द्वारा बनाए गए चित्र ईशान अहिरवार, तपोदीप्त त्रिपाठी, कलश मिश्रा, शुभ चौरसिया	19
19-	महान वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग- सुश्री श्वेताक्षी मिश्रा	22
20-	अंटार्कटिका की पुण्यधरा (कविता) - डॉ.शुभ्रता मिश्रा	23
21-	कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती -सुश्री रीमा कुवालेकर (संकलन)	24
22-	एक्सोप्लेनेट्स: जीवन की नयी संभावना-डॉ.सुदर्शना शर्मा	25
23-	पुस्तकालय की कुछ महत्वपूर्ण हिन्दी पुस्तकें	27

संदेश

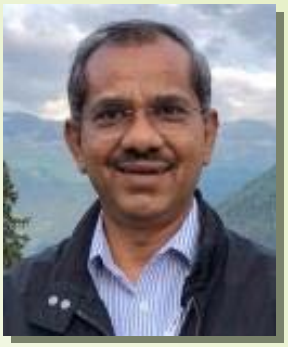

राष्ट्रीय ध्रुवीय एवं समुद्री अनुसंधान केंद्र की हिन्दी पत्रिका के प्रथम अंक को प्रकाशित करने पर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है ।

हिन्दी आज सम्पूर्ण विश्व पटल पर अपनी नई पहचान स्थापित कर रही है। एनसीपीओआर भी राजभाषा हिन्दी की प्रगति एवं उसे लोकप्रिय बनाने के लिए निरंतर प्रयत्नशील है। राजभाषा हिन्दी के विकास एवं प्रचार प्रसार में पत्रिका प्रकाशन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और यह हिन्दी पत्रिका संस्थान में राजभाषा को बढ़ावा देने में अहम भूमिका निभाएगी ।

यह पत्रिका अधिकारियों/ कर्मचारियों के ज्ञानवर्धन के साथ-साथ उनको अपना काम हिन्दी में करने के लिए प्रेरित करेगी,जिससे हमारी राजभाषा हिन्दी को एक नया आयाम मिलेगा।

हिन्दी पत्रिका के माध्यम से हमें संकल्प करना होगा कि राजभाषा हिन्दी की प्रगति में हम अपना योगदान सतत देते रहेंगे और कार्यालयी काम काज में अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने का प्रयास करेंगे । यही हमारी राष्ट्रीयता और राष्ट्र के प्रति दायित्व है।

मुझे विश्वास है कि इस हिन्दी पत्रिका से एक नई चेतना का संचार होगा और यह हिन्दी की प्रगति में सहायक सिद्ध होगी।

हिन्दी पत्रिका प्रकाशन के लिए समस्त एनसीपीओआर परिवार एवं संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की सफलता हेतु मेरी शुभकामनाएँ ।

एम. रविचंद्रन
निदेशक, एनसीपीओआर

अपनी बात

साथियों, मुझे आपके समक्ष अपनी बात साझा करते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि हमारे संस्थान से राजभाषा हिंदी में एक लघु पत्रिका का शुभारंभ होने जा रहा है। यह हमारी और आपकी अपनी ''ध्रुविका'' नामक पत्रिका का पहला अंक है।

यह प्रामाणिक सत्य है कि पत्र-पत्रिकाएँ मानव समाज की दिशा-निर्देशिका होती हैं। पत्रिका पाठकों में जागृति के साथ साथ विचारों का सटीक संप्रेषण करती है। यूं तो हिंदी ही नहीं वरन् सभी भारतीय भाषाओं में पत्रिकाओं की संख्या बहुत अधिक बढ़ गई है। यहां तक कि अब ई-पत्रिकाएं भी आने लगी हैं। लेकिन इसके बावजूद भी चिंता का विषय यह है कि लोगों में पढ़ने की संस्कृति का व्यापक ह्रास हुआ है। इसके लिए कारण बहुत मिल जाएंगे, लेकिन फिर भी मैं समझता हूं कि पाठकों की वापसी बेहद जरुरी है।

इतिहास पर दृष्टिपात करें तो हम पाते हैं कि भाषा, भाव और साहित्य की वैचारिक और सामाजिक सरोकारों वाली उद्देश्यपूर्ण रचनात्मकता के संरक्षण, संवर्द्धन और पोषण में लघु पत्रिकाओं की ऐतिहासिक भूमिका रही है। श्रेष्ठ पत्रिकाओं ने सदैव एक व्यापक साहित्यिक-सांस्कृतिक आंदोलन के रूप में समाज में रचनात्मकता को प्रोत्साहन प्रदान किया है।

आज के दौर में तकनीकी विकास ने मानवीय अभिरुचियों से लेकर संवेदनाओं को तक जहां एक नया विस्तार दिया है, वहीं दुनिया सिमटकर एक छोटा सा गांव भी बनती सी जान पड़ती है। महान विचारक मैक्लुहान ने एक बार कहा था कि आधुनिक दौर में मनुष्य का पैर पहिए में रूपांतरित हो जाएगा, कान फैल जाएंगे और सब कुछ आइने की तरह बन जाएगा कि कुछ भी छिपा नहीं रह पाएगा। उनकी यह भावनात्मक भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य हो रही है।

हमें भविष्य को देखने से पहले वर्तमान को देखना होगा। नई नई तकनीक के आने से मुद्रित पत्रिकाओं का युग बीत रहा है और सोशल मीडिया या ई-पत्रिकाएं उनका विकल्प बन रही हैं। फिर भी ऐसा नहीं कह सकते कि मुद्रित पत्रिकाएं समाप्त हो गई हैं। क्योंकि आज भी इंटरनेट की कनेक्टिविटी और ई पत्रिकाओं को खोलने की प्रक्रिया की कम समझ के कारण पाठक पत्रिकाओं से जुड़े हैं। फिर भी आपाधापी वाले अति व्यस्त माहौल में आवश्यकता इस बात की है कि लोगों में पढ़ने की रुचि पैदा की जाए।

आज कल देखने में आ रहा है कि सोशल मीडिया के आने पर लोगों की रचनाशीलता बढ़ी है, लेकिन अच्छी रचनाओं की कमी खलती है। लघु पत्रिकाओं की एक खूबी होती है कि है कि वे रचनाधर्मिता को अपसंस्कृति से निकाल कर संस्कृति की ओर ले जाती हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए ही हमारे संस्थान ने ध्रुविका को प्रकाशित करने का निर्णय लिया है।

आज साहित्य में नवीन विचारों और मान्यताओं को प्रश्रय मिलने के कारण भाषा व शिल्प में भी लचीलापन आया है। कविताओं में छंदबद्धता के प्रति आग्रह टूटा है। साथ ही पाठकों को भी रुचि के अनुरूप विषय चयन की सुविधा मिल रही है। हमारी ध्रुविका ऐसी ही बहुआयामी भूमिका निभाने का प्रयास करने जा रही है। इसमें एक ओर सार्थक साहित्य लेखन है, दूसरी ओर वैचारिक स्वास्थ्य का भी समावेश किया गया है। आशा है पहले अंक में शामिल अभिव्यक्तियां पाठकों की भावनाओं और विचारों की रचनात्मकता के मर्म को छू पाने में सफल हो पाएंगी।

हमने इस पत्रिका के माध्यम से विमर्शों की जमीन तैयार करने का बीड़ा उठाया है। हम ज्ञान के व्यवसायीकरण से गुजर रहे हैं। हमने पूरा प्रयास किया है कि पत्रिका महज बड़े लेखकों की रचनाओं का संकलन भर होकर न रह जाए, इसलिए संकलन के साथ स्थापित और नवोदित लेखकों और कवियों की रचनाएं हमने शामिल की हैं।

मैं मानता हूं कि क्षेत्रीय स्तर पर लघु पत्रिका निकालने से उसका बड़ी संख्या में प्रसार होता है। ऐसी पत्रिका वे भी पढ़ते हैं जो आमतौर पर नहीं पढ़ते।

आशा है कि ध्रुविका के इस प्रथम अंक निकालने के हमारे सामूहिक प्रयास से हिंदी भाषा और उसके साहित्य को पढ़ने की संस्कृति का संरक्षण और विकास में हम अपेक्षणीय योगदान दे पाएंगे।

आप हमें अपनी प्रतिक्रियाओं से अवगत कराएंगे, इस शुभेच्छा और पत्रिका को पढ़ने के अनुरोध के साथ

आपका

रवि मिश्रा

हिन्दी सप्ताह 7- 14 सितंबर 2018

हिन्दी सप्ताह के दौरान एनसीपीओआर में विभिन्न कार्यक्रम व प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

एनसीपीओआर निदेशक डॉ. एम. रविचंद्रन ने हिन्दी सप्ताह का शुभारम्भ किया।
इस अवसर पर निदेशक महोदय और राजभाषा अधिकारी डॉ. रवि मिश्रा ने उद्‌बोधन दिया।

एनसीपीओआर में नगर राजभाषा कार्यांवयन समिति, दक्षिण गोवा के विभिन्न संस्थानों
के प्रतियोगी हिन्दी निबंध प्रतियोगिता में भाग लेते हुए।

हिन्दी सप्ताह में श्रुतलेखन प्रतियोगिता में भाग लेते हुए कर्मचारीगण।

हिन्दी सप्ताह में पत्र लेखन प्रतियोगिता में भाग लेते हुए अधिकारी और कर्मचारीगण।

हिन्दी सप्ताह के अन्तर्गत आयोजित क्विज प्रतियोगिता।

हिन्दी सप्ताह के अन्तर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को निदेशक महोदय द्वारा पुरस्कार वितरण।

नराकास के अंतर्गत आने वाले कार्यालयों के लिए एनसीपीओआर में हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन

हिन्दी सप्ताह के दौरान एनसीपीओआर द्वारा नराकास के अंतर्गत आने वाले सभी कार्यालयों के लिए हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । इस प्रतियोगिता में कुल 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया था। प्रतियोगिता के विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं।

क्र सं	नाम	पदनाम	कार्यालय का नाम	पुरस्कार
1	श्री सुधाकर तरवे	निवारक अधिकारी	कस्टम विभाग, गोवा	प्रथम
2	श्री शशि कान्त	एल. ई. एम. ए	आईएनएस हंस, गोवा	द्वितीय
3	श्री अमित कुमार	उप निरीक्षक	सीआईएसएफ, गोवा	द्वितीय
4	सुश्री प्रतिभा पाण्डेय	वरिष्ठ कार्यकारी	एनसीपीओआर, गोवा	तृतीय
5	श्री मुनेन्द्र सिंह	ई आर ए 3	आईएनएस हंस, गोवा	तृतीय

दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन

विज्ञान एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के साथ 27-28 दिसंबर 2018 को एनसीपीओआर में दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का विषय ''ध्रुवीय एवम् समुद्री अनुसंधान में तकनीकी शब्दावली का प्रयोग एवम् महत्व'' था।

कार्यशाला का उद्घाटन ''विज्ञान एवम् तकनीकी शब्दावली आयोग'' नई दिल्ली के अध्यक्ष प्रोफेसर अवनीश कुमार ने दीप प्रज्वलन

उद्घाटन समारोह में गोवा विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर रवींद्रनाथ मिश्र मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थे। विज्ञान एवम् तकनीकी शब्दावली आयोग की कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती चकप्रम बिनोदिनी ने कार्यक्रम का विवरण दिया। इस कार्यशाला में देश के प्रतिष्ठित संस्थानों से आमंत्रित अतिथि वक्ताओं द्वारा कुल नौ व्याख्यान दिए गए। समापन समारोह में प्रसिद्ध समुद्र वैज्ञानिक डॉ. राजीव निगम विशिष्ट अतिथि थे। पूरे गोवा के विभिन्न संस्थानों के लगभग 160 से अधिक अधिकारियों और कर्मचारियों ने इसमें भाग लिया।

गणतंत्र दिवस की झलकियाँ

एनसीपीओआर के विभिन्न अनुसंधान आधारों पर 26 जनवरी 2019 को 70 वां गणतंत्र दिवस बहुत धूम-धाम से मनाया गया।

भारतीय अंटार्कटिक स्टेशन भारती में राष्ट्रीय ध्वज फहराते हुए वैज्ञानिक।

भारतीय अंटार्कटिक स्टेशन मैत्री में राष्ट्रीय ध्वज फहराते हुए वैज्ञानिक।

अनुसंधान पोत सागर कन्या पर राष्ट्रीय ध्वज फहराते हुए वैज्ञानिक।

गणतंत्र दिवस पर एनसीपीओआर निदेशक, डॉ.एम रविचंद्रन राष्ट्रीय ध्वज फहराते हुए।

वर्ष के दौरान एनसीपीओआर में विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं विद्यालयों के छात्रों का शैक्षणिक भ्रमण

विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं विद्यालयों के छात्रों ने एनसीपीओआर में भ्रमण किया तथा वैज्ञानिकों से अंटार्कटिका से जुड़ी अनेक रोचक और ज्ञानवर्धक जानकारियाँ प्राप्त की।

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के छात्र वैज्ञानिकों से बातचीत करते हुए ।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के एम.एस.सी के छात्रों को वैज्ञानिकों द्वारा व्याख्यान दिया गया।

विद्यालयीन छात्रों ने एनसीपीओआर वैज्ञानिक प्रयोगशाला का भ्रमण किया तथा वैज्ञानिकों से विभिन्न विषयों पर जानकारियाँ प्राप्त कीं।

अंटार्कटिक दिवस

1 दिसंबर 2018 को विश्व अंटार्कटिक दिवस के उपलक्ष्य में श्री मिर्ज़ा जावेद बेग, वैज्ञानिक 'जी' व्याख्यान देते हुए। इस उपलक्ष्य में विभिन्न प्रतियोगिताएं हुई एवं विजेताओं को पुरस्कार वितरण किया गया।

इंडो - नार्वे दल बैठक

20 नवंबर 2018 को एनसीपीओआर में इंडो - नार्वे दल की बैठक हुई और बदलते हुए क्रायोस्फ़ेयर पर चर्चा तथा चर्चा के उपरांत नार्वेजियन दल को सम्मानित किया गया।

आईएनक्यूयू- कार्यकारी समिति

15 जनवरी 2019 को आईएनक्यूयू कार्यकारी समिति का एनसीपीओआर में भ्रमण एवं पर्यावरण से जुड़े विशेष पहलुओं पर वैज्ञानिको के साथ समिति के सदस्य चर्चा करते हुए।

38 वां भारतीय वैज्ञानिक अंटार्कटिक अभियान

38 वां भारतीय वैज्ञानिक अंटार्कटिक अभियान एनसीपीओआर से विभिन्न समूहों मे भेजा गया।

38 वें अंटार्कटिक अभियान के विभिन्न दल।

38 वें भारतीय वैज्ञानिक अंटार्कटिक अभियान के सदस्य,
सी स्कैन मरीन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड में अग्निशमन प्रशिक्षण में भाग लेते हुए।

अंटार्कटिका में स्थित मैत्री स्टेशन पर प्रस्थान करता हुआ प्रथम भारतीय वैज्ञानिक दल ।

अंटार्कटिका में स्थित भारती स्टेशन लार्सेमान हिल्स पर काम करते वैज्ञानिक।

106 वां भारतीय विज्ञान सम्मेलन

एनसीपीओआर वैज्ञानिकों ने डॉ. विपिन चंद्र, संयुक्त सचिव,पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के नेतृत्व में पंजाब के जालंधर में 106 वें भारतीय विज्ञान सम्मेलन में हिस्सा लिया।

द थर्ड पोल ऑफ़ पैनल चर्चा,19 नवंबर, 2018

द थर्ड पोल ऑफ़ पैनल चर्चा 19 नवंबर, 2018 को एनसीपीओआर में आयोजित हुई। चर्चा के दौरान भारत में नॉर्वे के राजदूत का स्वागत किया गया तथा डॉ. एम. राजीवन, सचिव, एमओईएस; डॉ. एम. रविचंद्रन, निदेशक, एनसीपीओआर; डॉ सुनील कुमार सिंह, निदेशक, सीएसआईआर-एनआईओ व अन्य गणमान्यजन इस दौरान उपस्थित रहे।

एनसीपीओआर स्थापना दिवस के 20 वर्ष

एनसीपीओआर ने अपनी स्थापना के 20 वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण किए। इस अवसर पर 5 अप्रैल 2019 को एनसीपीओआर में आयोजित कार्यक्रम की झलकियाँ -

इस अवसर पर **प्रथम अंतरिक्ष यात्री, विंग कमांडर, श्री राकेश शर्मा** मुख्य अतिथि के रूप में एनसीपीओआर में पधारे और अंतरिक्ष से जुड़ी अनेक मनोरंजक बातों और अंतरिक्ष अन्वेषण की भविष्य की संभावनाओं से अवगत कराया।

विंग कमांडर, श्री राकेश शर्मा छात्रों द्वारा अंतरिक्ष से जुड़े अनेक रोचक सवालों का जवाब देते हुए।

एनसीपीओआर में विंग कमांडर श्री राकेश शर्मा वृक्षारोपण करते हुए तथा एनसीपीओआर परिवार के साथ।

जय हिन्दी ! जय देव नागरी ! जय जय भारत माता।

जय हिन्दी ! जय देव नागरी ! जय जय भारत माता।
'तुलसी' 'सूर' और 'मीरा' का जीवन इसमें गाता ।।
नभ से नाद सुनें हिन्दी का, धरती पर हिन्दी हो।
भारत माता के माथे पर हिन्दी की बिन्दी हो ।।
यही राष्ट्र भाषा है अपनी, यही राज भाषा है।
मातृ प्रेम का मधु है इसमें, सब की अभिलाषा है ।
जय जय हिन्दी का जयकारा, कोटि कोटि को भाता ।
जय हिन्दी ! जय देवनागरी ! जय जय भारत माता !!
सारी दुनिया ऊंचे स्वर से- जय जय हिन्दी ! गाये ।
जन जन का मन इस भाषा पर - पूजा फूल चढ़ाये ।।
चलो ! हिमालय की चोटी पर- जय जय हिन्दी गायें ।
हिन्दी की गंगा हिमगिरि से- दुनिया में लहरायें ।
हिन्दी भाषा के भारत में, गीत तिरंगा गाता ।
जय हिन्दी ! जय देवनागरी ! जय जय भारत माता !!

गिरना भी अच्छा है,
औकात का पता चलता है
बढ़ते हैं जब हाथ उठाने को
अपनों का पता चलता है!
जिन्हे गुस्सा आता है,
वो लोग सच्चे होते हैं,
मैंने झूठों को अक्सर
मुस्कुराते हुए देखा है
सीख रहा हूँ मैं भी,
मनुष्यों को पढ़ने का हुनर,
सुना है चेहरे पे
किताबो से ज्यादा लिखा होता है!

संकलन
सुश्री प्रतिभा पाण्डेय

सागर यात्रा संस्मरण

दक्षिणी हिन्द महासागर में सागर कन्या का
अपने आप में था ये पहला अनूठा अभियान
पृथ्वी से जुड़े अनेक शोध विषयों पर केन्द्रित था इसका ध्यान
एसके - 200 ने अपनी उपलब्धियों से बनाई अपनी अग्रणी पहचान ।।
वैज्ञानिक उपलब्धियों द्वारा इसने बनाया इतिहास में अपना स्थान
पर साथ ही साथ इससे जुड़े अनुभव की है एक अनूठी दास्तान
करते हैं इसके दौरान हुए कुछ
जीवंत अनुभव का एक एक कर बखान
नजर डालते हैं इसके घटनाचक्र पर
और देखते हैं इससे क्या मिली सीख और ज्ञान ।।
मॉरिशस से चल कर आगे हमारे सामने आया एक 'अल्गीब्लूम'
जिसे देख सब लगने लगे झूम
फिर कुदरत का देखा एक ऐसा खेल
आई हमको लुभाने जाने कहाँ से एक दो व्हेल
चले फिर आगे तो मौसम में आया कुछ फर्क
पानी में तैरता आया हमारे सामने एक सुंदर आइसबर्ग
देखकर सबने दिल अपना बहलाया,
कप्तान ने भी धीरे धीरे सतर्कता से 'कन्या' को घुमाया
खींची तस्वीरें सब ने जम के पास से,
ठंडी हवाओं में भी माहौल खूब गरमाया ।।

बढ़ते जा रहे थे उत्साह से आगे, क्या होगा नहीं था पता
हवाएँ चलेंगी कैसी, लहरों का क्या होगा मिजाज
रास्ते होंगे साफ़, या आएगी कोई रूकावट
समुंदर की लहरें और वातावरण में
जब दिखाई देने लगी कुछ खुसफुसाहट ।।

देखते ही देखते दक्षिणी हिंद महासागर ने ली ऐसी करवट
हवाओं ने तोड़ी हदें, और लहरों में आया एक भयानक उफान
चौखट पर देने लगा दस्तक एक ऐसा भयावह तूफ़ान
डोलने लगा जहाज और मचा टूट फूट का ऐसा घमासान,
हवा हुई सबकी मुस्कान ।।

घबराहट भरी रातों के बाद भी शांति का था नहीं नामो-निशान
गले में थी अटकी सबकी अपनी अपनी जान
दिलाकर ज़िंदादिलों को भी मौत के करीबी का ज्ञान
तूफान ने भी धीमा होकर रास्ता बदला, होकर हम पर मेहरबान ।।
धीरे धीरे लौटने लगा सबका टूटा धैर्य और विश्वास
फिर भी कोई न ले पाया चैन की एक भी साँस
क्योंकि ज़िंदगी ने ला खड़ा किया था मौत के इतना करीब, इतना पास ।।

ऊपर वाले से देखा न गया ये गमगीन हाल
दिखाया कुदरत ने फिर ऐसा कमाल,जिससे हुए सभी खुशहाल
काले बादलों से अचानक होने लगा हल्का बर्फीला 'स्नोफॉल'
झूमने लगे सभी, चेहरों पर सबके रौनक हुई बहाल ।।

दिया ऊपरवाले को धन्यवाद होकर नतमस्तक
लौट चले देकर अंटार्कटिका को सूदूर से ही दस्तक
सोच रहे थे सब कैसे घर पहुंचे सही सलामत
अनुभव जिंदगी का हुआ न था ऐसा अबतक ।।

डर, घबराहट भूले सब, जैसे हो अतीत की बात
मन में सबके उमड़ी उमंग बिताने समय परिवार जनों के साथ
सूर्योदय से पहले ही फ़ोन की लाइन में लगाया अपना चांस
टूटती बिखरती तरंगों पर भी हुआ कुछ क्षणों का 'रोमांस' ।।

एक महीने से भी ज्यादा का हो चला था समुद्री प्रवास
थके थके से थे पर मन में फिर भी भरा था उत्साह
पता नहीं था अब भी घर पहुँचना हो सकता है इतना दूभर
होने लगा था लंबा वापसी हवाई यात्रा के इंतजार का सफ़र ।।

अंततः सकुशल पहुंचे सभी अपने अपने घर
अद्भुत, अनुभव भरा और अनोखा था ये समुद्री सफ़र
खुशियाँ, गम और यादें एस के-200 की
याद रहेगी हमें हमेशा जिंदगी भर ।।

बना विवेक से जब कोई लांघता है अपनी सीमा
प्रकृति के नियम नहीं कर सकते उसे अनदेखा
पल भर में समाप्त हो सकता है जिंदगी का लेखा- जोखा
यह सबने भली भांति सीखा ।।

- डॉ. सत्येन्द्र भंडारी

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

एनसीपीओआर में 8 मार्च को महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने हेतु अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया ।

विश्व योग दिवस

21 जून को विश्व योग दिवस के अवसर पर एनसीपीओआर परिवार ने योग शिविर आयोजित किया।

अंटार्कटिका का भारती स्टेशन

अंटार्कटिका के भारती स्टेशन पर योग करके वैज्ञानिकों ने राष्ट्र को योग के प्रति जागरूकता का संदेश दिया ।

यदि शरीर व मन स्वस्थ नहीं है,
तो लक्ष्य को पाना असम्भव है।
योग करने से मन और शरीर दोनों स्वस्थ होते हैं।।

गंगा क्या तुझे गुस्सा नहीं आता ?

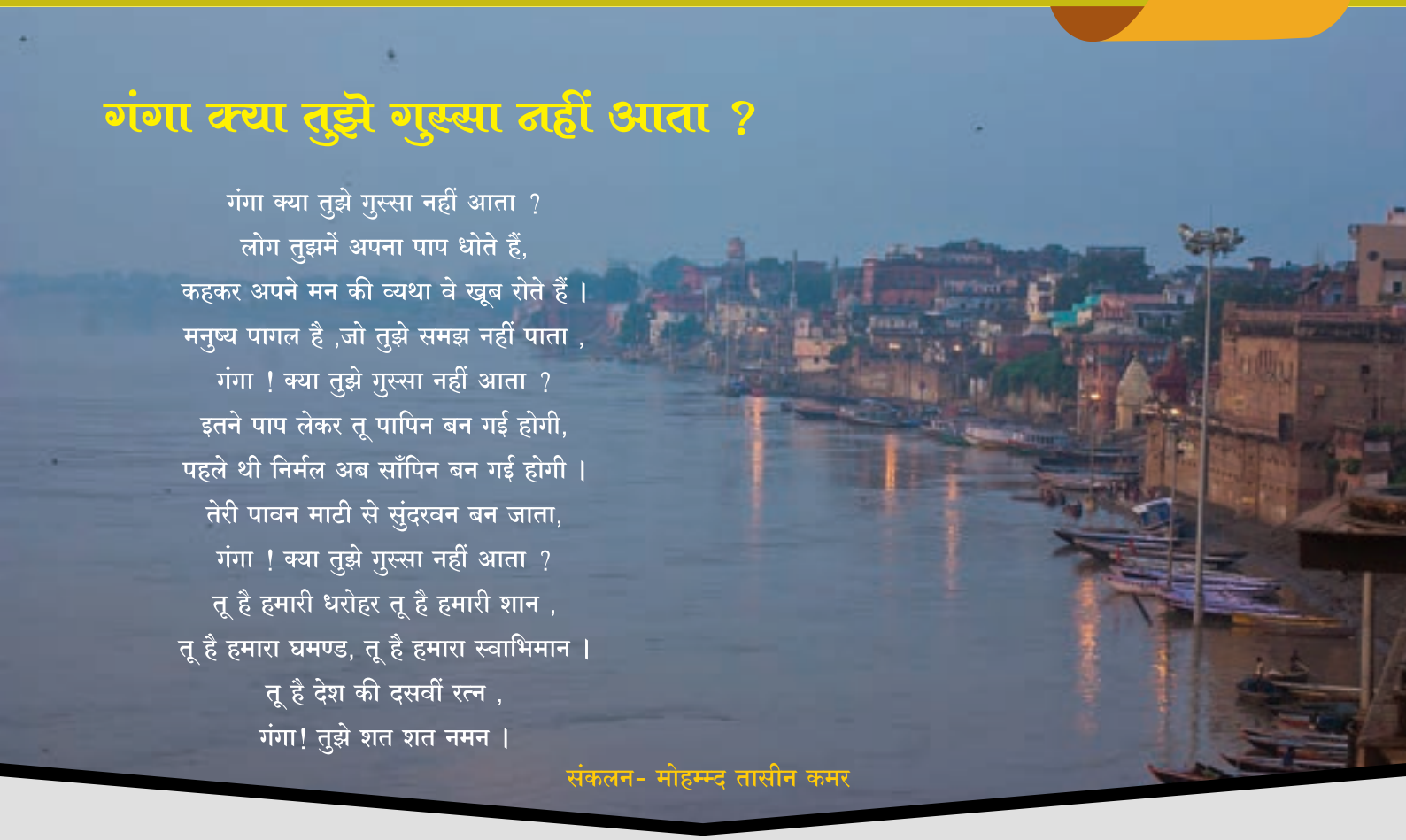

गंगा क्या तुझे गुस्सा नहीं आता ?
लोग तुझमें अपना पाप धोते हैं,
कहकर अपने मन की व्यथा वे खूब रोते हैं ।
मनुष्य पागल है ,जो तुझे समझ नहीं पाता ,
गंगा ! क्या तुझे गुस्सा नहीं आता ?
इतने पाप लेकर तू पापिन बन गई होगी,
पहले थी निर्मल अब साँपिन बन गई होगी ।
तेरी पावन माटी से सुंदरवन बन जाता,
गंगा ! क्या तुझे गुस्सा नहीं आता ?
तू है हमारी धरोहर तू है हमारी शान ,
तू है हमारा घमण्ड, तू है हमारा स्वाभिमान ।
तू है देश की दसवीं रत्न ,
गंगा! तुझे शत शत नमन ।

संकलन- मोहम्मद तासीन कमर

मैं भारत देश का एक जिम्मेदार नागरिक
होने के नाते शपथ लेता हूँ कि
सार्वजनिक स्थानों पर कचरा नहीं डालूँगा।
उसे निर्धारित स्थानों पर ही डालूँगा।
मेरा सभी मित्रो से निवेदन है कि
यह संदेश देश की आवाज बने
जिससे मेरा भारत
''स्वच्छ भारत'' ''स्वस्थ भारत'' बने।
क्या आप मेरे साथ है?
कृपया अपने नाम से ये संदेश आगे बढायें ।
''जय हिन्द''

संकलन
श्री राजेन्द्र कुमार

स्वच्छ भारत मिशन

सफाई का जो रखें ध्यान
बीमारियों से बचती जान
ख्वाब से न कोई आगे बढ़ता
बस कर्मों से बनता महान,
इधर उधर न फेंक के कूड़ा
कूड़ेदान में हमें पहुँचाना है
भारत को स्वच्छ बनाना है
भारत को स्वच्छ बनाना है।
न फेंके नदियों में कूड़ा
न प्लास्टिक का उपयोग करें
कुदरत को नुकसान न हो
ऐसी चीजों का उपभोग करें,
वातावरण को भी तो हमको
प्रदुषण मुक्त बनाना है
भारत को स्वच्छ बनाना है।।

किसान की कहानी

किसान की यह कथा है,
हर दूसरे की यही व्यथा है।
जीवनयापन की या देश की सोचे,
जेब और पेट की एक ही दशा है।

देश की नज़रे मंगल पर हैं,
नगरों की निगाहे जंगल पर हैं।
पर नहरों के देश में,
खेतिहर की नज़रें अब भी बादल पर हैं।

हर पांच साल आशाओं की हवा आती है,
कुछ और दिलासे दे जाती हैं।
सब सफेदपोशों को उसकी सादगी बहुत भाती है।

अर्ज़ियां उसकी, उसकी पुकार,
हर दर से बाहर फेंकी जाती है,
ज़िंदा चाहे किसी के काम का न लगे,
जाने के बाद उस पर सियासी रोटी सेंकी जाती है।

अन्नदाता के इस हाल को देख सोचता हूँ,
क्यूँ उसकी हालत के लिये औरो को कोसता हूँ।
चमचमाती दुकानो में खर्च करना शान समझता हूँ,
और उसकी हाट पर चंद सिक्कों का मोल भाव करता हूँ।

जब हम खुद की सोच बदलेंगे,
तब उनके चेहरे पे रौनक आयेगी ।
जब उसे उसका देय मिलेगा,
तभी देश को प्रगति की राह मिलेगी।

तब तक मैं, आप, सब मोबाइल, कंप्यूटर पर समाचार पढ़ते हैं,
और फिल्मों की चर्चा करते हैं।
किसी को क्या पड़ी,
कितने जीते, कितने मरते हैं।

- श्री रविंद्र सिंह

चाणक्य के कुछ अनमोल विचार

1. कोई काम शुरू करने से पहले, स्वयं से तीन प्रश्न कीजिये - मैं ये क्यों कर रहा हूँ, इसके परिणाम क्या हो सकते हैं और क्या मैं सफल होऊंगा, और जब गहराई से सोचने पर इन प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर मिल जायें, तभी आगे बढिए। व्यक्ति अकेले पैदा होता है और अकेले मर जाता है; और वो अपने अच्छे और बुरे कर्मों का फल खुद ही भुगतता है; और वह अकेले ही नर्क या स्वर्ग जाता है।
2. अगर सांप जहरीला ना भी हो तो उसे खुद को जहरीला दिखाना चाहिए।
3. शिक्षा सबसे अच्छी मित्र है। एक शिक्षित व्यक्ति हर जगह सम्मान पाता है। शिक्षा, सौंदर्य और यौवन को परास्त कर देती है।
4. जैसे ही भय आपके करीब आये, उस पर आक्रमण कर उसे नष्ट कर दीजिये।
5. कोई व्यक्ति अपने कार्यों से महान होता है, अपने जन्म से नहीं।
6. जिस प्रकार एक सूखे पेड़ को अगर आग लगा दी जाये तो वह पूरा जंगल जला देता है, उसी प्रकार एक पापी पुत्र पुरे परिवार को बर्बाद कर देता है।
7. सबसे बड़ा गुरु मन्त्र है : कभी भी अपने राज़ दूसरों को मत बताएं, ये आपको बर्बाद कर देगा।
8. हर मित्रता के पीछे कोई ना कोई स्वार्थ होता है. ऐसी कोई मित्रता नहीं जिसमे स्वार्थ ना हो. यह कड़वा सच है।
9. सांप के फन, मक्खी के मुख और बिच्छु के डंक में ज़हर होता है; पर दुष्ट व्यक्ति तो इससे भरा होता है।

संकलन- सौरभ भट्ट

एनसीपीओआर परिवार के बच्चों द्वारा बनाए गए चित्र

- ईशान अहिरवार

- तपोदीप्त त्रिपाठी

एनसीपीओआर परिवार के बच्चों द्वारा बनाए गए चित्र

- कलश मिश्रा

एनसीपीओआर परिवार के बच्चों द्वारा बनाए गए चित्र

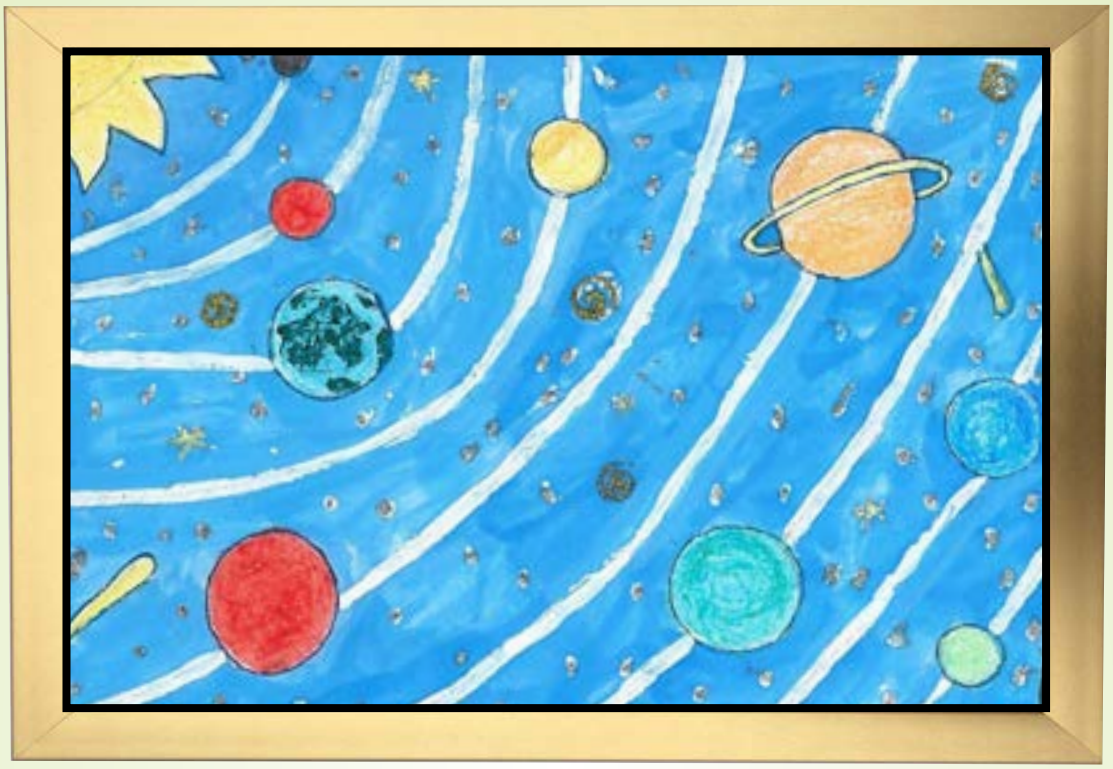

-शुभ चौरसिया

महान वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग

विज्ञान जगत की बड़ी क्षति का दिन बना था, 4 मार्च 2018, इस दिन विश्व के जाने-माने भौतिक विज्ञानी स्टीफन हॉकिंग सदा के लिए दुनिया छोड़कर चले गए थे। 21 साल की उम्र में ही वे एक ऐसी भयानक बीमारी के शिकार हो गए थे, जिसमें उनका दिमाग छोड़कर शरीर का कोई भी अंग काम नहीं करता था। डॉक्टरों ने कह दिया था कि वो दो साल से ज्यादा नहीं जी पाएंगे, लेकिन 50 से ज्यादा साल जीने के दौरान हॉकिंग ने अपने डॉक्टरों की भविष्यवाणी को गलत साबित कर दिया।

यह उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति ही थी, जिसने न केवल स्टीफन को 76 वर्षों की सुदीर्घ आयु तक जीवंत रखा बल्कि विज्ञान जगत को उन्होंने अपने शोधों के माध्यम से ब्रह्मांड के रहस्य समझाए। उनकी कुछ महत्वपूर्ण किताबों में ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ टाइम, द ग्रांड डिजाइन, यूनिवर्स इन नटशेल, माई ब्रीफ हिस्ट्री और द थ्योरी ऑफ एवरीथींग शामिल हैं।

स्टीफन हॉकिंग एक ऐसे वैज्ञानिक थे जो दुनिया को अलग नजरिए से देखते थे। वे हमेशा अपनी सफलता का श्रेय अपनी बीमारी को देते थे। उनका मानना था कि बीमारी से पहले वे अपनी पढ़ाई पर ज्यादा ध्यान नहीं देते थे लेकिन बीमारी के दौरान उन्हें लगने लगा कि वे लंबे समय तक जिंदा नहीं रह सकते, इसलिए उन्होंने अपना सारा ध्यान शोध पर केंद्रित कर लिया।

स्टीफन का कहना था कि हमें हमेशा सितारों की ओर देखना चाहिए, न कि अपने पैरों की ओर। इसी तरह उन्होंने सीख दी कि कभी भी काम करना नहीं छोड़ना चाहिए, कोई काम ही व्यक्ति को जीने का एक उद्देश्य देता है। उन्होंने शारीरिक रूप से दिव्यांग लोगों को प्रेरणा देते हुए एक बार कहा था कि किसी के भी शरीर की कमी कुछ भी अच्छा करने से नहीं रोक सकती है। इसका कभी भी अफसोस नहीं करना चाहिए साथ ही अपंग होना बुरी बात नहीं है।

जीवन में सफलता के अचूक मंत्र के लिए उनका कहना था कि व्यक्ति को कभी भी मौत से नहीं डरना चाहिए। गुस्सा मानवता का सबसे बड़ा दुश्मन होता है। अतः जीवन में सफलता पाने के लिए इससे दूर रहना ही श्रेयस्कर है। यूनिवर्सिटी ऑफ कैम्ब्रिज के सेंटर फॉर थियोरेटिकल कॉस्मोलॉजी के रिसर्च विभाग के डायरेक्टर और 12 मानद डिग्रियों से सम्मानित हॉकिंग निश्चय ही एक अद्भुत व्यक्तित्व के धनी थे। 8 जनवरी, 1942 को इंग्लैंड के ऑक्सफोर्ड में जन्मे स्टीफन हॉकिंग जीते जी ही पूरी दुनिया के लिए एक मिसाल बन गए थे। उन्होंने सही मायने में मृत्यु को जीता है।

ऐसे अजेय और अमर वैज्ञानिक को विनम्र श्रद्धांजलि।

सुश्री श्वेताक्षी मिश्रा

अंटार्कटिका की पुण्यधरा

परमशीतला, श्वेताम्बरा
पंचकोटि अवनि इतिहास का
द्रोण सुधा सींचती
गोंडवानालेंड के विलगाव का
कोण आधा खींचती
दुर्गम, प्रचण्ड, शुष्कता से भरी
पुण्यसलिला, हिमरुचिरा,
अंटार्कटिका की पुण्यधरा।।

परमअचला, श्वेतगम्भीरा
इहशोक के स्पंदन के
मौन संगीत से गूंजती
इहलोक के संचलन के
परम रहस्य को बांचती
अगम, अखण्ड, वातता से भरी
श्वेतरुधिरा, हिमकंदरा,
अंटार्कटिका की पुण्यधरा।।

परमधवला, श्वेतनीरा
सौर विकिरणों की
लघुतरंगें बिखेरती
नीर के त्रिरुप में
प्रकृति में बिराजती
रहस्यों, विस्मयों, झंझावता से भरी
श्वेतचर्चिता, हिमअधरा
अंटार्कटिका की पुण्यधरा।।

परममरुस्थला, श्वेतचीरा
भूल द्वेष प्रेमभूत मानवता
सदियों से कर रही आरती
शांतिमय विज्ञान हेतु
दशकों से गूंज रही भारती
तितिक्षा, चुनौती, शुष्कता से भरी
श्वेतसंस्कृता, हिमनिर्झरा
अंटार्कटिका की पुण्यधरा।।

परमवत्सला, श्वेतमीरा
निस्तब्ध एकांतता में
ब्रह्माण्ड आप पूजती
पृथ्वी की अंतिम विशाल
अप्रसूता श्राप झेलती
पुष्पहीना, विषकंटका, विविक्ता से भरी
श्वेतमाता, हिममंदिरा,
अंटार्कटिका की पुण्यधरा।।

रचना- डॉ. शुभ्रता मिश्रा

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।
नन्ही चींटी जब दाना ले कर चढ़ती है
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रगं मे साहस भरता है
चढ़ कर गिरना, गिर कर चढ़ना न अखरता है
मेहनत उसकी बेकार नहीं हर बार होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

डुबकियाँ सिंधु में गोताखोर लगाता है
जा-जा कर खाली हाथ लौट कर आता है
मिलते न सहज ही मोती गहरे पानी में
बढ़ता दूना विश्वास इसी हैरानी में
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।
असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो
क्या कमी रह गयी देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो नींद-चैन को त्यागो तुम
संघर्षों का मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किए बिना ही जय-जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

- संकलन
रीमा कुवालेकर

एक्सोप्लेनेट्स : जीवन की नयी संभावना

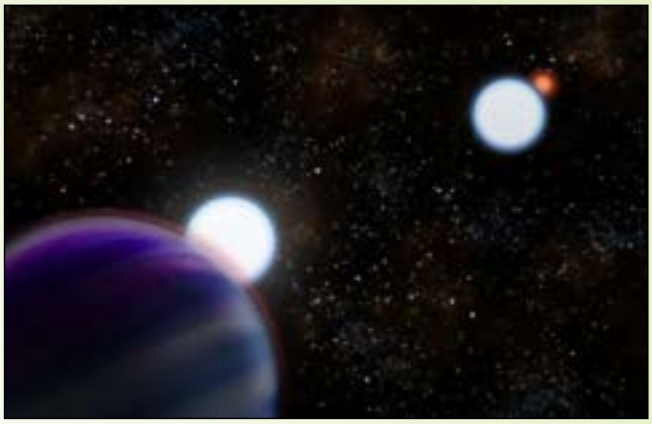

हमारा ब्रह्माण्ड अनगिनत रहस्यों से भरा हुआ है। वैज्ञानिक लगातार प्रयोग व अध्ययन कर इसके रहस्यों से परदे उठाने में लगे हुए हैं। प्राचीन समय से ही मनुष्य अपने सौरमंडल के ग्रहों के बारे में जानकारी जुटाने में लगा रहा है । जैसे-जैसे उसने नयी तकनीक विकसित की अपने सौर मंडल के बाहर भी जीवन को ढूंढना शुरू कर दिया। इसी कड़ी में उसने एक्सोप्लेनेट्स की भी खोज की, ये एक्सोप्लेनेट जो अन्य तारों के चारों ओर परिक्रमा करते हैं, इन्हे एक्स्ट्रासोलर ग्रह भी कहा जाता है। पृथ्वी की सतह-आधारित और अंतरिक्ष-आधारित वेधशालाओं के माध्यम से हजारों संभावित एक्सोप्लेनेट पाए गए हैं। पृथ्वी के वैज्ञानिक लगातार ऐसे एक्सोप्लेनेट की खोज कर रहे हैं जहाँ जीवन की संभावना हो। एक तारे के आसपास का क्षेत्र जहां एक ठोस ग्रह की सतह पर पानी (जमी बर्फ के रूप) मौजूद हो, को रहने योग्य क्षेत्र कहा जाता है और ऐसे क्षेत्रों को जीवन की संभावना के रूप में देखा जा सकता है। बाहरी सौर मंडल की खोज के लिए नासा ने केपलर मिशन की शुरुआत 2009 में की थी। यह आज भी अपनी खोज जारी रखे हुए है। अन्य मिशन जिन्हें बाहरी सौरमंडल की खोज में दिलचस्पी है,उनमें हबल स्पेस टेलीस्कोप, यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी से सी.ओ.आर.ओ.टी. मिशन, डब्लू.आई.एस.ई. मिशन और हर्शेल अंतरिक्ष यान शामिल हैं। ग्राउंड-आधारित वेधशालाएं दूर की दुनिया की खोज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनी हुई हैं। एक्सोप्लेनेट को दूरबीन से सीधे देखना बहुत कठिन होता है क्योंकि वे बहुत दूर होते हैं और जिस तारे की कक्षा में वो चक्कर लगा रहे हैं उनकी चमक से छिप जाते हैं । निकटतम ज्ञात एक्सोप्लेनेट ऑर्बिटिंग स्टार को एप्सिलॉन एरिडानी कहा जाता है, जो 63 ट्रिलियन मील दूर है - यह हमारे सौर मंडल के सबसे दूर के ग्रह, नेप्च्यून से 14,000 गुना दूर है।

कई एक्सोप्लेनेट में एक्सोमून पाया गया है, जब कि कई एक्सोप्लेनेट वाष्पीकृत होने की वजह से अपने पीछे धुएं के निशान छोड़ रहे है और अपने तारे की भी परिक्रमा करते है। फरवरी 2014 तक केप्लर स्पेस टेलीस्कोप ने 2300 एक्सोप्लेनेट्स की खोज की है। 2018 तक कुल 3903 एक्सोप्लेनेट्स खोजे जा चुके है। ये सारे एक्सोप्लेनेट्स, 2909 मंडल सिस्टम में है तथा इसमें 247 मंडल सिस्टम ऐसे हैं, जिसमे एक से ज्यादा प्लेनेट हैं। अभी हाल में ही जनवरी 2019 में नासा ने एक नए ग्रह की खोज की है जो पृथ्वी से 53 प्रकाश वर्ष दूर तारा मंडल के सूर्य के समान चमकीले बौने तारे का चक्कर लगा रहा है। इसका नाम उन्होंने एच डी 21749 बी रखा है, इसकी सतह का तापमान 3000F है। ये पृथ्वी से तीन गुना बड़ा और 23 गुना भारी है तथा सब-नेप्च्यून वर्ग में रखा गया है। वैज्ञानिकों का कहना है कि पानी के कारण इसका वायुमंडल घना है और इस पर जीवन की संभावना भी हो सकती है।

हमारे अपने सौर मंडल के ग्रहों की तरह, एक्सोप्लेनेट विभिन्न आकार और रचनाओं में छोटे चट्टानी ग्रहों से लेकर विशाल गैस जायंट तक आते हैं। इन सब के आधार पर एस्ट्रोनॉमर्स ने इन एक्सोप्लेनेटस को कई भागों में विभाजित किया है। जैसे पथरीले ग्रह, सुपर पृथ्वी, महासागरीय ग्रह और रेगिस्तानी ग्रह, गरम बृहस्पति, खानाबदोश ग्रह आदि।

पथरीले ग्रह, जिसे स्थलीय ग्रह भी कहा जाता है, जैसा कि हमारे अपने सौर मंडल में, तथा अन्य ग्रह प्रणालियों में बहुत आम हैं। चट्टानी ग्रह मुख्य रूप से भारी तत्वों जैसे कि सिलिकेट चट्टानों या धातुओं से

बने होते हैं और उनकी ठोस ग्रह सतह उन्हें जटिल जीवन के लिए विशेष रूप से अनुकूल बनाती है।

सुपर पृथ्वी वैसे ग्रह है जिनका द्रव्यमान पृथ्वी के द्रव्यमान तथा दस पृथ्वी द्रव्यमानों के बीच में हो। सुपर शब्द का अर्थ न तो सुपर-रहने योग्य है और न ही यह एक्सोप्लेनेट की सतह की स्थिति के बारे में कुछ कहता है, इसका अर्थ केवल हमारी पृथ्वी से बड़ा है। किसी भी तरह, सुपर-पृथ्वी हमारे अपने ग्रह पृथ्वी की तुलना में जीवन के लिए और भी उपयुक्त हो सकती है - मुख्य रूप से उनके अनुकूल टेक्टोनिक गतिविधि के कारण हमारे अपने सौरमंडल में कोई सुपर-अर्थ नहीं हैं।

महासागरीय ग्रह और रेगिस्तानी ग्रह ऐसे ग्रह हैं जिनके पास महासागरों के साथ ग्रह की पूरी सतह को पूरी तरह से आवरित करने के लिए पर्याप्त पानी है। सुपर-अर्थ सहित सभी चट्टानी ग्रह, पानी की दुनिया बन सकते हैं, बशर्ते कि ग्रह अपने तारे के रहने योग्य क्षेत्र में बदल जाए। जैसा कि हम जानते हैं कि पृथ्वी पर जीवन सबसे पहले महासागरों में विकसित हुआ था, इसलिए ऐसा लगता है कि समुद्र के ग्रहों पर भी जीवन बन सकता है।

गैस जायंट, पृथ्वी के 10 गुना से अधिक द्रव्यमान वाले सभी ग्रहों को गैस जायंट कहा जाता है। इन ग्रहों में संभवतः एक छोटा चट्टानी कोर है, लेकिन वे मुख्य रूप से हाइड्रोजन और हीलियम से बने हैं। हमारे अपने सौर मंडल में चार गैस जायंट हैं: बृहस्पति, शनि, यूरेनस और नेपच्यून क्योंकि विशाल गैस जायंट को छोटे चट्टानी ग्रहों की तुलना में पता लगाना आसान है। पहले सारे खोजे गए एक्सोप्लैनेट्स गैस जायंट ही है।

गर्म बृहस्पति, एक विशालकाय गैस का पुंज है जो अपने मेजबान तारे की एक बहुत करीबी कक्षा में परिक्रमा करता है। असल में ये विशाल गैस का पुंज होता है, जिनका सतह का तापमान बहुत ज्यादा होता है, मतलब हम ये कह सकते है कि यह एक विशालकाय गैस का उच्च तापमान वाला एक्सोप्लेनेट है।

खानाबदोश ग्रह को अनाथ ग्रह या दुष्ट ग्रह के नाम से जाना जाता है। खानाबदोश ग्रह एक ऐसा ग्रह है जो बिना केंद्रीय तारे का है तथा वे हमारी आकाशगंगा भर में स्वतंत्र हैं। चूंकि उनके आसपास कोई तारा नहीं है इसलिए वे अंधेरे में घूमते है और उनका पता लगाना बहुत मुश्किल है। यह अनुमान लगाया जाता है कि हमारी आकाशगंगा में दुष्ट ग्रहों की संख्या सितारों की संख्या से अधिक है, इसलिए कम से कम 200 से 400 बिलियन दुष्ट ग्रह अब मिल्की वे के माध्यम से तैर रहे हैं।

खानाबदोश ग्रह या अनाथ ग्रह केंद्रीय तारे के बिना ग्रह हैं; वे हमारी समस्त आकाशगंगा में स्वतंत्र हैं। चूंकि उनके आसपास कोई तारा नहीं है इसलिए वे अंधेरे हैं और उनका पता लगाना बहुत मुश्किल है। यह अनुमान लगाया जाता है कि हमारी आकाशगंगा में दुष्ट ग्रहों की संख्या तारों की संख्या से अधिक है एवं कम से कम 200 से 400 बिलियन दुष्ट ग्रह मिल्की वे में तैर रहे हैं।

मानव जाति शुरू से ही खोजी प्रवृत्ति की रही है और आज जब हमारी वैज्ञानिक शक्ति का विकास अंतरिक्ष तक पहुंच गया है , हम अपने मानव जीवन को दूसरे ग्रह पर ले जाने में सक्षम है, हमारे लिए एक्सोप्लेनेट्स पर जीवन की संभावना एक क्रांति की तरह है तथा ये अपेक्षा भी है कि यहाँ पाए जाने बाले तत्त्व, मिनरल विज्ञान की बहुत सारी नयी संभावनाओं को जन्म दे और विज्ञान के एक नयी युग की शुरुआत हो।

- डॉ.सुदर्शना शर्मा

एनसीपीओआर के पुस्तकालय में संग्रहित हिन्दी पुस्तकें

1- महासागरीय संसाधन
सम्पादक- श्री आर. एन. वोहरा
श्री राकेश शर्मा, बी.एन.धवन,
जे.वी.आर. प्रसादराव,
एस.ए.एच.आबिदी, पी.नटराजन
प्रकाशन- महासागर विकास विभाग
नई दिल्ली.
वर्ष- 1994

2-धड़कता महाद्वीप
लेखक - डॉ. निलय खरे,
डॉ. पी सी पाण्डेय
श्री राकेश शर्मा
प्रकाशन-अंटार्कटिक अध्ययन केंद्र,गोवा
महासागर विकास विभाग, नई दिल्ली
वर्ष -1998

3- सागर शुक्ति
मुख्य सम्पादक-डॉ. ई. डेसा
प्रकाशन-राष्ट्रीय समुद्री विज्ञान
संस्थान,डौना पाउला,गोवा
वर्ष -1999

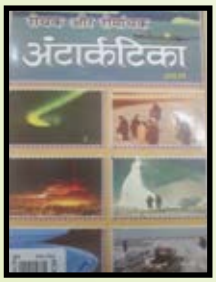

4- रोचक और रोमांचक अंटार्कटिका
सम्पादक- अरुण
प्रकाशन - प्रभात प्रकाशन , नई दिल्ली
वर्ष -2000

5- भारत में विज्ञान के बढ़ते चरण
सम्पादक -डॉ. पी सी पाण्डेय
प्रकाशन - एनसीएओआर द्वारा
वर्ष -2000

6- एनसीएओआर - वर्षों के पार
प्रकाशन - एनसीएओआर द्वारा
वर्ष -2001

7- धरती से अन्तरिक्ष तक विज्ञान की पहल
सम्पादक -डॉ. पी सी पाण्डेय
डॉ. निलय खरे
प्रकाशन - एनसीएओआर द्वारा
वर्ष -2001

8- भारत में विज्ञान की उपलब्धियां
सम्पादक -डॉ. पी सी पाण्डेय
डॉ. निलय खरे
प्रकाशन - एनसीएओआर द्वारा
वर्ष -2002

9- तटीय क्षेत्र प्रबंधन
सम्पादक-श्री सूरज प्रकाश सेठ
श्री गिरीश पिल्लै, मंजुल मेहता,
के.नारायणन
प्रकाशन-महासागर विकास विभाग
नई दिल्ली
वर्ष -2002

10- भारतीय प्रक्षेपास्त्र के जनक - डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम
सम्पादक-डॉ. श्रवण
प्रकाशन- जगत राम एंड संस,नई दिल्ली
वर्ष -2003

एनसीपीओआर के पुस्तकालय में संग्रहीत हिन्दी पुस्तकें

11-समुद्री ऊर्जा एवं प्रौद्योगिकी विकास
सम्पादक-श्री सूरज प्रकाश सेठ
श्री राकेश कुमार, मंजुल मेहता
प्रकाशन-महासागर विकास विभाग
नई दिल्ली
वर्ष- 2003

13-भारतीय अंटार्कटिक संभार तंत्र
लेखिका - डॉ. शुभ्रता मिश्रा
प्रकाशन- एनसीएओआर द्वारा
वर्ष-2012

12- अंटार्कटिक- भविष्य का महाद्वीप
सम्पादक- डॉ. श्याम सुंदर शर्मा
प्रकाशन-सत्साहित्य प्रकाशन
नई दिल्ली
वर्ष- 2008

14-एक वैज्ञानिक की अंटार्कटिक यात्राओं के रोचक संस्मरण पृथ्वी के छोर पर
सम्पादक- डॉ. शरदिन्दु मुकर्जी
वर्ष- 2017

‘‘ध्रुविका’’